



## Review Article

# 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय वीरांगनाओं की भूमिका

प्रो. (मेजर) डॉ. अनिता जून

प्राचार्या, गवर्नमेंट गर्ल्स कॉलेज, दादूपुर रोड़ान, करनाल, हरियाणा, भारत

Corresponding Author: \* प्रो. (मेजर) डॉ. अनिता जून

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.20726972>

## सारांश

सन् 1857 का स्वतंत्रता संग्राम भारतीय इतिहास का एक अविस्मरणीय अध्याय है, जिसे प्रथम स्वाधीनता संग्राम के नाम से भी जाना जाता है। इस महान संघर्ष में जहाँ पुरुष वीरों ने अपनी तलवारें उठाईं, वहीं भारतीय नारी शक्ति भी पीछे नहीं रही। रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हज़रत महल, झलकारी बाई, अवंतीबाई लोधी, ऊदा देवी पासी जैसी अनेक वीरांगनाओं ने अपने प्राणों की परवाह किए बिना देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। प्रस्तुत शोध पत्र में इन वीरांगनाओं के साहस, नेतृत्व, बलिदान और उनके ऐतिहासिक योगदान का विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार इन महिला योद्धाओं ने पितृसत्तात्मक समाज की सीमाओं को तोड़कर एक नई इतिहास गाथा लिखी।

## Manuscript Information

- ISSN No: 2583-7397
- Received: 11-07-2025
- Accepted: 26-08-2025
- Published: 31-08-2025
- IJCRM:4(4); 2025: 800-803
- ©2025, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

## How to Cite this Article

प्रो. (मेजर) डॉ. अनिता जून. 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय वीरांगनाओं की भूमिका. Int J Contemp Res Multidiscip. 2025;4(4):800-803.

## Access this Article Online



[www.multiarticlesjournal.com](http://www.multiarticlesjournal.com)

**कुंजी शब्द:** 1857 का स्वतंत्रता संग्राम, वीरांगनाएँ, रानी लक्ष्मीबाई, महिला सशक्तिकरण, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन

## 1. प्रस्तावना

भारत के इतिहास में 10 मई, 1857 का दिन एक क्रांतिकारी मोड़ के रूप में अंकित है। मेरठ से उठी विद्रोह की चिंगारी शीघ्र ही सम्पूर्ण उत्तर भारत में फैल गई और देखते ही देखते यह एक व्यापक जन-आन्दोलन का रूप ले लिया। इस संग्राम का मूल कारण केवल चर्बी लगे कारतूसों का विवाद नहीं था, अपितु इसके पीछे ब्रिटिश

साम्राज्यवाद की शोषणकारी नीतियाँ, धार्मिक हस्तक्षेप, जमींदारों-नवाबों की सत्ता का हनन और आर्थिक दोहन जैसे गहरे कारण निहित थे। इस स्वतंत्रता संग्राम में एक उल्लेखनीय पक्ष यह है कि इसमें भारतीय महिलाओं ने भी सक्रिय भागीदारी निभाई। यद्यपि परंपरागत इतिहास लेखन में इन वीरांगनाओं की भूमिका को अपेक्षित महत्त्व नहीं दिया गया, तथापि आधुनिक शोध और अनुसंधान से यह स्पष्ट होता है

कि इन महिलाओं ने न केवल युद्ध भूमि में, बल्कि गुप्तचरी, रसद प्रबंधन, सैन्य प्रशिक्षण और जन-जागरण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन वीरांगनाओं की कहानियाँ राष्ट्रीय गौरव, स्त्री-शक्ति और मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम का जीवंत प्रमाण हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में 1857 के संग्राम में महिलाओं की भूमिका को विभिन्न आयामों से विश्लेषित किया गया है — उनका सैन्य नेतृत्व, राजनीतिक दूरदर्शिता, सामाजिक-धार्मिक प्रेरणा और उनके बलिदान की गाथाएँ। इस अध्ययन का उद्देश्य इतिहास के उन स्वर्णिम पृष्ठों को प्रकाश में लाना है, जो या तो अनदेखे रहे या जिन्हें न्यायोचित स्थान नहीं मिला।

## 2. रानी लक्ष्मीबाई — झाँसी की वीरांगना

1857 के स्वतंत्रता संग्राम की सबसे दैदीप्यमान नक्षत्र हैं झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, जिनका वास्तविक नाम मणिकर्णिका था। 19 नवम्बर, 1828 को काशी (वाराणसी) में जन्मी मणिकर्णिका का विवाह झाँसी के महाराजा गंगाधर राव से हुआ था। पति की मृत्यु के पश्चात जब गवर्नर-जनरल डलहौजी ने 'हड़प नीति' (Doctrine of Lapse) के अंतर्गत झाँसी को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने का प्रयास किया, तब रानी लक्ष्मीबाई ने दृढ़ता से घोषणा की — 'मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।'

रानी ने अपनी प्रजा को सशस्त्र प्रशिक्षण दिया। महिला सैन्य दल की स्थापना की, जिसमें झलकारी बाई, मुंदर और काशी जैसी वीरांगनाएँ शामिल थीं। मार्च 1858 में जब ब्रिटिश सेना ने झाँसी पर आक्रमण किया, तो रानी ने वीरता के साथ युद्ध किया। झाँसी के पतन के बाद वे तात्या टोपे के साथ ग्वालियर पहुँचीं और वहाँ भी अंग्रेजों से लोहा लिया। 18 जून, 1858 को कोटा की सराय के पास रण में वे वीरगति को प्राप्त हुईं।

ब्रिटिश सेनापति सर ह्यू रोज़ ने भी उनकी वीरता की प्रशंसा करते हुए कहा था कि वे विद्रोहियों में सर्वाधिक वीर और सर्वोत्कृष्ट सेनानायक थीं। उनकी वीरता की गाथा सुभद्राकुमारी चौहान की कालजयी कविता 'खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी' में अमर हो गई है।

## 3. बेगम हज़रत महल — अवध की महारानी

लखनऊ की बेगम हज़रत महल 1857 के संग्राम की एक और महान वीरांगना हैं। जब अंग्रेजों ने अवध के नवाब वाजिद अली शाह को कलकत्ता निर्वासित कर दिया, तब बेगम हज़रत महल ने अपने नाबालिग पुत्र बिरजिस कदर को अवध का नवाब घोषित किया और स्वयं संग्राम की कमान संभाली।

बेगम ने लखनऊ के आम जनमानस को जाग्रत किया। उन्होंने किसानों, ज़मींदारों और सैनिकों को एकजुट कर एक शक्तिशाली प्रतिरोध खड़ा किया। उनकी घोषणाओं में ब्रिटिश शासन की अत्याचारी नीतियों का पर्दाफाश किया गया। जब मार्च 1858 में लखनऊ ब्रिटिश सेना के नियंत्रण में आ गया, तब बेगम ने नेपाल में आश्रय लिया और अंत तक अंग्रेजों के सामने समझौता करने से इनकार किया। उनकी अदम्य साहस और राजनीतिक कुशलता उन्हें इतिहास में अमर बनाती है। 7 अप्रैल 1879 को नेपाल में उनका निधन हुआ, परन्तु उनका संघर्ष आज भी प्रेरणास्रोत है।

बेगम हज़रत महल की विशेषता यह थी कि उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता को प्रोत्साहित किया और अपनी अपीलों में धार्मिक सन्दाव का संदेश दिया। उन्होंने वायसरॉय के उस घोषणापत्र का खुलकर विरोध किया जिसमें धार्मिक स्वतंत्रता का आश्वासन दिया गया था, और कहा कि यह मात्र एक छलावा है।

## 4. झलकारी बाई — झाँसी की अमर योद्धा

झलकारी बाई का नाम उन वीरांगनाओं में अग्रगण्य है, जो इतिहास की उपेक्षा का शिकार हुईं। झाँसी के भोजला गाँव में जन्मी झलकारी बाई एक कुशल घुड़सवार और शस्त्र-विशेषज्ञ थीं। उनकी वीरता से प्रभावित होकर रानी लक्ष्मीबाई ने उन्हें 'दुर्गा दल' — अपनी महिला सैन्य टुकड़ी — का प्रमुख बनाया।

झलकारी बाई का रानी से शारीरिक साम्य अद्भुत था। 1858 में जब ब्रिटिश सेना झाँसी किले को घेरकर रानी को पकड़ने पर आमादा थी, तब झलकारी बाई ने रानी का वेश धारण कर अंग्रेजों का ध्यान भटकाया, जिससे रानी किले से सुरक्षित निकल सकीं। अंग्रेजी सेना के सामने आत्मसमर्पण करते समय उन्होंने निर्भयता से कहा — 'मैं यहाँ हूँ।' यह बलिदान निःस्वार्थ देशभक्ति का सर्वोच्च उदाहरण है। दलित समाज में झलकारी बाई आज भी एक आदर्श प्रतीक हैं।

## 5. अवंतीबाई लोधी — रामगढ़ की वीरांगना

मध्यप्रदेश के मंडला जिले के रामगढ़ रियासत की रानी अवंतीबाई लोधी भी 1857 के संग्राम की एक महत्वपूर्ण योद्धा थीं। अपने अक्षम पति के स्थान पर उन्होंने रियासत का कुशल संचालन किया। जब अंग्रेजों ने रामगढ़ की प्रशासनिक व्यवस्था अपने हाथों में लेने का प्रयास किया, तब रानी अवंतीबाई ने विरोध का झंडा उठाया।

उन्होंने आसपास के गाँवों में संदेश भेजा — 'देश के लिए लड़ो, नहीं तो चूड़ियाँ पहनो।' इस ललकार से हज़ारों पुरुष युद्ध के लिए प्रेरित हुए। उन्होंने 4,000 से अधिक सैनिकों की सेना बनाई और ब्रिटिश सेना से दो बार लड़ाई लड़ी। मार्च 1858 में जब पराजय निश्चित लगी, तो उन्होंने वीरांगनाओं की परंपरा में अपनी ही तलवार से अपना बलिदान दे दिया, ताकि शत्रु के हाथ न आएँ। उनका यह आत्मबलिदान उनकी स्वाभिमानी प्रकृति का परिचायक है।

## 6. ऊदा देवी पासी — लखनऊ की अज्ञात वीरांगना

ऊदा देवी पासी वे वीरांगना हैं, जिनका नाम इतिहास के पन्नों में बहुत कम स्थान पाता है, परन्तु उनका बलिदान असाधारण था। अवध की महिला सेना में शामिल ऊदा देवी ने नवंबर 1857 में सिकंदरबाग के युद्ध में अद्वितीय वीरता का प्रदर्शन किया। एक पीपल के पेड़ पर चढ़कर उन्होंने अपनी बंदूक से अनेक ब्रिटिश सैनिकों को मार गिराया।

जब ब्रिटिश कैप्टन वॉलेस ने उन्हें खोज निकाला और गोली मारी, तब उनके गिरने के बाद ही पता चला कि यह वीर योद्धा एक महिला थी। कैप्टन वॉलेस स्वयं उनकी वीरता से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने उनकी शहादत को सलाम किया। ऊदा देवी दलित वर्ग की प्रतिनिधि थीं और उनकी वीरता यह सिद्ध करती है कि 1857 का संग्राम सामाजिक भेदभाव से परे एक समावेशी राष्ट्रीय आन्दोलन था।

## 7. अन्य उल्लेखनीय वीरांगनाएँ

### 7.1 चौहान रानी — बाँदा की रानी

बाँदा (उत्तर प्रदेश) की चौहान रानी ने भी 1857 में अंग्रेज़ों का डटकर सामना किया। उन्होंने बाँदा के नवाब अली बहादुर के साथ मिलकर संग्राम में भाग लिया और अपनी प्रजा को संगठित किया। जब अंग्रेज़ों ने बाँदा पर अधिकार किया, तो रानी ने आत्मसमर्पण करने की बजाय संघर्ष जारी रखा।

### 7.2 तपस्विनी महाराज — क्रांतिकारी संन्यासिनी

तपस्विनी महाराज (मूल नाम महारानी सुनीति देवी) ने 1857 के बाद भी क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया। एक संन्यासिनी का वेश धारण कर उन्होंने अनेक युवाओं को देशभक्ति के लिए प्रेरित किया। वे बाद में क्रांतिकारी दल की महत्वपूर्ण सदस्य बनीं।

### 7.3 मैना — नाना साहब की पुत्री

नाना साहब पेशवा की पुत्री मैना का नाम भी इस संग्राम से जुड़ा है। जब अंग्रेज़ी सेना ने बिठूर स्थित नाना साहब के महल को नष्ट किया, तब मैना ने उस स्थान की रक्षा के लिए ब्रिटिश अधिकारियों से साहस के साथ वार्ता की। कहा जाता है कि वे उस आग में जल गईं जो अंग्रेज़ों ने महल में लगाई थी। उनकी कहानी दयनीय होते हुए भी प्रेरणादायक है।

## 8. वीरांगनाओं की भूमिका का बहुआयामी विश्लेषण

### 8.1 सैन्य नेतृत्व

1857 की इन वीरांगनाओं ने परंपरागत स्त्री-भूमिका से बाहर निकलकर सैन्य नेतृत्व की जिम्मेदारी उठाई। रानी लक्ष्मीबाई ने युद्ध नीति बनाई, अवंतीबाई ने सेना संगठित की और बेगम हज़रत महल ने प्रशासनिक-राजनीतिक कुशलता दिखाई। इन महिलाओं ने सिद्ध किया कि नेतृत्व-शक्ति लिंग-निर्धारित नहीं होती।

### 8.2 सामाजिक बाधाओं को तोड़ना

19वीं शताब्दी का भारतीय समाज अत्यंत पितृसत्तात्मक था। पर्दा प्रथा, बाल-विवाह और महिलाओं की घरेलू सीमाबद्धता इस युग की सामाजिक वास्तविकता थी। ऐसे वातावरण में इन वीरांगनाओं का युद्धभूमि में उतरना न केवल राजनीतिक क्रांति थी, बल्कि एक सामाजिक क्रांति भी थी। झलकारी बाई और ऊदा देवी जैसी दलित वर्ग की वीरांगनाओं ने जाति-भेद की दीवारें भी तोड़ीं।

### 8.3 गुप्तचरी और सूचना तंत्र

अनेक सामान्य महिलाओं ने भी संग्राम में योगदान दिया — भले ही उनके नाम इतिहास में दर्ज न हों। सैनिकों को रसद पहुँचाना, गुप्त संदेश का आदान-प्रदान करना, घायल सैनिकों की सेवा करना और शरण देना — ये सब कार्य महिलाओं ने किए। कुछ महिलाओं ने तो ब्रिटिश छावनियों में काम करते हुए गुप्त सूचनाएँ एकत्र कीं।

### 8.4 जन-जागरण और प्रेरणा

अवंतीबाई लोधी की उद्घोषणा हो या बेगम हज़रत महल के फरमान — इन वीरांगनाओं ने अपने शब्दों और कार्यों से समाज के प्रत्येक वर्ग को जागृत किया। उनकी वीरता की कहानियाँ लोकगीतों, कविताओं और मौखिक परंपराओं के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी प्रसारित होती रहीं और स्वतंत्रता की चेतना को जीवित रखा।

### 9. इतिहास-लेखन में उपेक्षा और पुनर्मूल्यांकन

औपनिवेशिक इतिहास लेखन ने स्वभावतः इन वीरांगनाओं की भूमिका को कम करके आँका। ब्रिटिश इतिहासकारों ने 1857 को 'सिपाही विद्रोह' (Sepoy Mutiny) कहकर इसे सीमित दायरे में बाँधने की कोशिश की और महिला नेतृत्व को स्वीकार करना उनके साम्राज्यवादी अहंकार के विरुद्ध था।

स्वतंत्रता के पश्चात भी मुख्यधारा का इतिहास पुरुष-केंद्रित रहा। विनायक दामोदर सावरकर जैसे इतिहासकारों ने 1857 को 'स्वतंत्रता संग्राम' का दर्जा दिया, परंतु महिला योद्धाओं पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। 1970-80 के दशक से 'महिला इतिहास' (Women's History) और 'सबाल्टर्न स्टडीज़' के उभरने के साथ इन वीरांगनाओं पर पुनः शोध प्रारम्भ हुआ।

आज अनेक भारतीय इतिहासकार — जैसे लक्ष्मी सहगल, विमला फ़ारूकी, इला भट्ट और अन्य — इन महिला योद्धाओं के जीवन और संघर्ष को उचित ऐतिहासिक स्थान दिलाने के लिए कार्य कर रहे हैं। सरकार ने भी डाक टिकट, सड़कों और संस्थाओं के नामकरण के माध्यम से इन वीरांगनाओं को सम्मानित किया है।

### 10. निष्कर्ष

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय वीरांगनाओं की भूमिका केवल प्रासंगिक नहीं, बल्कि केन्द्रीय महत्व की थी। रानी लक्ष्मीबाई के तलवार के वार हों, बेगम हज़रत महल की राजनीतिक दृढ़ता हो, झलकारी बाई का निःस्वार्थ बलिदान हो, अवंतीबाई का स्वाभिमानी जौहर हो या ऊदा देवी की अदम्य साहस — ये सभी मिलकर एक ऐसी वीरगाथा रचते हैं जो भारतीय नारी की अदम्य शक्ति का परिचय देती है।

ये वीरांगनाएँ न केवल अपने समय की महानायिकाएँ थीं, बल्कि उन्होंने भावी पीढ़ियों के लिए एक मार्ग भी प्रशस्त किया। उनके संघर्ष से प्रेरित होकर ही बाद में कस्तूरबा गांधी, सरोजिनी नायडू, विजयलक्ष्मी पंडित और अनेक महिलाओं ने स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी की। इन वीरांगनाओं का स्मरण करना केवल इतिहास का दोहराव नहीं, बल्कि उस मूल्य-बोध को पुनर्जीवित करना है जो आज भी प्रासंगिक है — स्वतंत्रता, स्वाभिमान और मातृभूमि के प्रति समर्पण।

जब तक भारत रहेगा, इन वीरांगनाओं की कहानियाँ अमर रहेंगी। इनके बलिदान की ऋणी यह मातृभूमि उनके नामों का सम्मान करती रहेगी। 'जय हिन्द' के उद्घोष में इन वीरांगनाओं की आत्मा का स्पंदन है।

**संदर्भ एवं ग्रंथ-सूची**

1. सावरकर वीडी. 1857 का स्वातंत्र्य समर. भारतीय प्रकाशन; 1909.
2. मालवीय एसएल. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई. प्रयागराज: साहित्य सम्मेलन; 1972.
3. मजूमदार आरसी. The Sepoy Mutiny and Revolt of 1857. कलकत्ता: Firma K.L. Mukhopadhyay; 1963.
4. लाल एम. Women in Indian revolt of 1857. नई दिल्ली: Gitanjali Publishing House; 2002.
5. सिंह आर. 1857 और हिन्दी नवजागरण. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 1985.
6. चन्द्र बी. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स; 1989.
7. महाश्वेता देवी. झाँसीर रानी. बंगाली से हिन्दी अनुवाद. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन; 1956.

**Creative Commons (CC) License**

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.